CHRONICLE
Nurturing Talent Since 1990

2008-2022

15वर्ष हल प्रश्न-पत्र
सिविल सेवा मुख्य परीक्षा

इतिहास

प्रश्नोत्तर रूप में

सिविल सेवा परीक्षा के पाठ्यक्रम पर आधारित

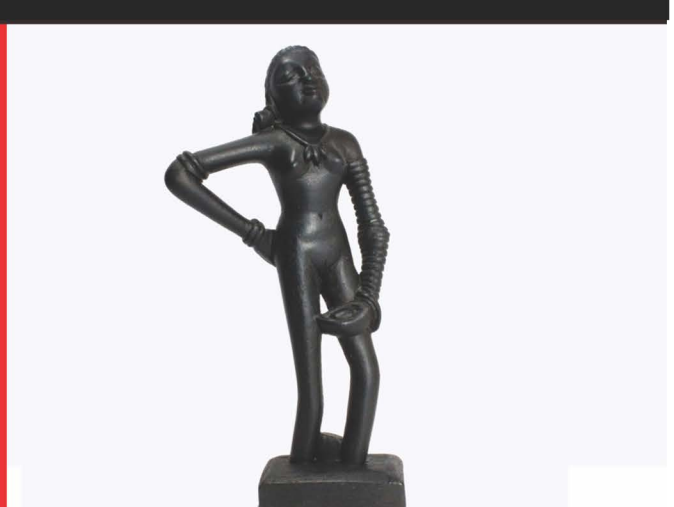

15 वर्ष (2008-2022)

अध्यायवार मुख्य परीक्षा हल प्रश्न-पत्र

इतिहास

प्रश्नोत्तर रूप में

सिविल सेवा परीक्षा के लिए

संघ एवं राज्य लोक सेवा आयोग तथा अन्य समकक्ष प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए समान रूप से उपयोगी

संपादकः एन. एन. ओझा
(सिविल सेवा परीक्षाओं के मार्गदर्शन में 30 से अधिक वर्षों का अनुभव)
लेखन एवं प्रस्तुतिः क्रॉनिकल संपादकीय समूह

CHRONICLE
Nurturing Talent Since 1990

पुस्तक के संबंध में

सिविल सेवा मुख्य परीक्षा के नवीनतम पाठ्यक्रम पर आधारित विगत 15 वर्षों (2008-2022) के प्रश्नों का अध्यायवार हल

पुस्तक के मूल्य को पाठकों के पहुंच तक बनाये रखने तथा पृष्ठ संख्या को सीमित रखने हेतु पूर्व के दो वर्षों (2006-2007) के प्रश्नों को पुस्तक से हटाया जा रहा है। यह सामग्री chronicleindia.in पर पाठकों के लिए नि:शुल्क उपलब्ध होगी।

प्रश्नों को हल करने की प्रकृति: पुस्तक में प्रश्नों के उत्तर को मॉडल हल के रूप में दिया गया है। प्रश्नों को हल करते समय इस बात का ध्यान रखा गया है कि उत्तर सारगर्भित हो तथा पूछे गए प्रश्नों के अनुरूप हों। पुस्तक में प्रश्नों के इतर भी विशिष्ट जानकारी को उत्तर में समाहित किया गया है, ताकि अभ्यर्थी इसका उपयोग न सिर्फ हल प्रश्न पत्र के रूप में, बल्कि अध्ययन सामग्री के रूप में भी कर सकें।

पुस्तक का उपयोग कैसे करें?: इस पुस्तक का उपयोग अभ्यर्थी अपने उत्तर लेखन शैली में सुधार लाने तथा प्रश्नों की प्रवृति व प्रकृति को समझने के लिये कर सकते हैं। किसी भी परीक्षा के विगत वर्षों के प्रश्न इसमें सबसे लाभदायक होते हैं। पुस्तक में दी गई सामग्री का इस्तेमाल बिंदुवार, निश्चित शब्द सीमा का पालन, उप-शीर्षक एवं आरेख आदि का प्रयोग अभ्यर्थी अपने उत्तर लेखन शैली के अभ्यास हेतु आधुनिक परिपेक्ष में कर सकते हैं। पुस्तक में प्रश्नों के उत्तर उसके सम्बंधित वर्ष के अनुसार ही दिया गया है।

इतिहास-एक वैकल्पिक विषय के रूप में: हाल के वर्षों में सिविल सेवा की परीक्षा हेतु उपलब्ध विभिन्न वैकल्पिक विषयों के पाठ्यक्रमों में अत्यधिक बदलाव हुए हैं एवं इस बदलाव के पश्चात 'इतिहास' विषय की लोकप्रियता एक वैकल्पिक विषय के रूप में बढ़ी है। इस विषय की लोकप्रियता का एक सबसे महत्वपूर्ण कारण इसका साक्ष्य आधारित होना है। एक बार समझ विकसित हो जाने पर इस विषय में रटने की आवश्यकता नहीं पड़ती। वस्तुत: इतिहास को आज 'कला' में 'विज्ञान' भी कह सकते हैं। यही कारण है कि इस विषय में अच्छे अंकों की संभावना अधिक है। इस विषय की दूसरी विशेषता है सही रणनीति की मदद से न्यूनतम समय में तैयारी, ताकि अच्छे अंक भी हासिल हों और कोई जोखिम भी न रहे। इतिहास विषय का अध्ययन आपके दृष्टिकोण को व्यापक बनाता है, जिससे आप विभिन्न घटनाक्रमों को प्रेरित करने वाले कारकों को समझ सकने की वैज्ञानिक दृष्टि पाते हैं। यह दृष्टि आपको न सिर्फ सामान्य अध्ययन बल्कि साक्षात्कार में भी अच्छे अंक लाने में सहयोग करता है।

यह पुस्तक छात्रों को संघ लोक सेवा आयोग मुख्य परीक्षा के आलावा राज्य लोक सेवा आयोगों (उत्तर प्रदेश, बिहार, उत्तराखंड, मध्य प्रदेश, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, एवं झारखण्ड) के बदले हुए पाठ्यक्रम में आयोजित होने वाले सिविल सेवा मुख्य परीक्षा के इतिहास के प्रश्न पत्र में उपयोगी साबित होगा।

संपादक

अनुक्रमणिका

विषयवार हल प्रश्न-पत्र 2008-2022

प्रथम प्रश्न–पत्र

- **मानचित्र.. 1-33**

1. स्त्रोत... 34-40

पुरातात्विक स्त्रोतः

अन्वेषण, उत्खनन, पुरालेखविद्या, मुद्राशस्त्र, स्मारक

साहित्यिक स्त्रोतः

- स्वदेशीः प्राथमिक एवं द्वितीयक; कविता, विज्ञान साहित्य, क्षेत्रीय भाषाओं का साहित्य, धार्मिक साहित्य।
- विदेशी वर्णन : यूनानी, चीनी एवं अरब लेखक

2. प्रागैतिहास एवं आद्य इतिहास.................. 43-43

- भौगोलिक कारक, शिकार एवं संग्रहरण (पुरापाषाण एवं मध्यपाषाण युग), कृषि का आरंभ (नवपाषाण एवं ताम्रपाषाण युग)।

3. सिंधु घाटी सभ्यता.................................. 44-51

- उद्गम, काल विस्तार, विशेषताएं, पतन, अस्तित्व एवं महत्व, कला एवं स्थापत्य।

4. महापाषाणयुगीन संस्कृतियां...................... 53-53

- सिंधु से बाहर पशुचारण एवं कृषि संस्कृतियों का विस्तार, सामुदायिक जीवन का विकास, बस्तियां, कृषि का विकास, शिल्पकर्म, मृदभांड एवं लौह उद्योग।

5. आर्य एवं वैदिक काल............................. 54-60

- भारत में आर्यों का प्रसार।
- वैदिक कालः धार्मिक एवं दार्शनिक साहित्य; ऋगवैदिक काल में उत्तर वैदिक काल तक हुए रूपांतरण; राजनैतिक; सामाजिक एवं आर्थिक जीवन; वैदिक युग का महत्व; राजतंत्र एवं वर्ग व्यवस्था का क्रम विकास।

6. महाजनपद काल...................................... 61-65

- महाजनपदों का निर्माण : गणतंत्रीय एवं राजतंत्रीय; नगर केंद्रों का उद्भव।
- ईरानी एवं मकदूनियाई आक्रमण एवं उनके प्रभाव।

7. मौर्य साम्राज्य... 66-74

- मौर्य साम्राज्य की नवी, चंद्रगुप्त, कौटिल्य और अर्थशास्त्र; अशोक; धर्म की संकल्पना; धर्मादेश; राज व्यवस्था; प्रशासन; अर्थव्यवस्था; कला, स्थापत्य एवं मूर्तिशिल्प; विदेशी संपर्क धर्म, धर्म का प्रसार; साहित्य साम्राज्य का विघटन; शुंग एवं कण्व।

8. उत्तर मौर्य काल (भारत-यूनानी, शक, कुषाण, पश्चिमी क्षत्रप)....................................... 75-83

- बाहरी विश्व से संपर्क; नगर-केंद्रों का विकास, अर्थ-व्यवस्था, टंकण, धर्मों का विकास, महायान, सामाजिक दशाएं, कला, स्थापत्य, संस्कृति, साहित्य एवं विज्ञान।

9. प्रारभिक राज्य एवं समाज; पूर्वी भारत, दकन एवं दक्षिण भारत में...................................... 84-89

- खारवेल, सातवाहन, संगमकालीन तमिल राज्य; प्रशासन, अर्थव्यवस्था, भूमि-अनुदान, टंकण, व्यापारिक श्रेणियां एवं नगर केंद्र; संगम साहित्य एवं संस्कृति, कला एवं स्थापत्य।

10. गुप्त वंश, वाकाटक एवं वर्द्धन वंश......... 90-97

- राज्य व्यवस्था एवं प्रशासन, आर्थिक दशाएं, गुप्तकालीन टंकण, भूमि, अनुदान, नगर केंद्रों का पतन, भारतीय सामंतशाही, जाति प्रथा, स्त्री की स्थिति, शिक्षा एवं शैक्षिक संस्थाएं, नालंदा, विक्रमशिला एवं बल्लभी, साहित्य, विज्ञान-साहित्य, कला एवं स्थापत्य।

11. गुप्तकालीन क्षेत्रीय राज्य......................... 98-107

- कदंब वंश, पल्लप वंश, बादामी का चालुक्यवंश; राज व्यवस्था एवं प्रशासन, व्यापारिक श्रेणियां, साहित्य; वैष्णव एवं शैल धर्मों का विकास, तमिल भक्ति आंदोलन, शंकराचार्य; वेदांत; मंदिर संस्थाएं एवं मंदिर स्थापत्य; पाल वंश, सेन वंश, राष्ट्रकूट वंश, परमार वंश, राज्य व्यवस्था एवं प्रशासन, सांस्कृतिक पक्ष, सिंध के अरब विजेता; अलबरूनी, कल्याण का चालुक्य वंश, चोल वंश; होयशल वंश, पांड्य वंश, राज व्यवस्था एवं प्रशासन; स्थानीय शासन; कला एवं स्थापत्य का विकास, धार्मिक संप्रदाय; मंदिर एवं मठ संस्थाएं; अग्रहार वंश, शिक्षा एवं साहित्य; अर्थव्यवस्था एवं समाज।

12. प्रारंभिक भारतीय सांस्कृतिक इतिहास के प्रतिपाद्य 108–113

- भाषाएं एवं मूलग्रंथ, कला एवं स्थापत्य के क्रम विकास के प्रमुख चरण, प्रमुख दार्शनिक चिंतक एवं शाखाएं, विज्ञान एवं गणित के क्षेत्र के विचार।

13. प्रारंभिक मध्यकालीन भारत, 750-1200 ... 114–121

- राज व्यवस्था: उत्तरी भारत एवं प्रायद्वीप में प्रमुख राजनैतिक घटनाक्रम, राजपूतों का उद्‌गम एवं उदय।
- चोल वंश : प्रशासन, ग्रामीण अर्थव्यवस्था एवं समाज
- भारतीय सामंतशाही
- कृषि अर्थव्यवस्था एवं नगरीय बस्तियां
- व्यापार एवं वाणिज्य
- समाज: ब्राह्मण की स्थिति एवं नई सामाजिक व्यवस्था स्त्रियों की स्थिति
- भारतीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी

14. भारत की सांस्कृतिक परंपरा, 750-1200 122–129

- दर्शन: शंकराचार्य एवं वेदांत, रामानुज एवं विशिष्टाद्वैत, मध्य एवं ब्रह्म-मीमांसा।
- धर्म: धर्म के स्वरूप एवं विशेषताएं, तमिल भक्ति, संप्रदाय, भक्ति का विकास, इस्लाम एवं भारत में इसका आगमन, सूफी मत।
- साहित्य: संस्कृत साहित्य, तमिल साहित्य का विकास, नवविकासशील भाषाओं का साहित्य, कल्हण की राजतरंगिणी, अलबरूनी का इंडिया।
- कला एवं स्थापत्य : मंदिर स्थापत्य, मूर्तिशिल्प, चित्रकला।

15. तेरहवीं शताब्दी 130–135

- दिल्ली सल्तनत की स्थापना : गोरी के आक्रमण, गोरी की सफलता के पीछे कारक
- आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिणाम
- दिल्ली सल्तनत की स्थापना एवं प्रारंभिक तुर्क सुल्तान
- सुदृढ़ीकरण : इल्तुतमिश और बलबन का शासन।

16. चौदहवीं शताब्दी 136–142

- खिलजी क्रांति।
- अलाउद्दीन खिलजी: विज्ञान एवं क्षेत्र-प्रसार, कृषि एवं आर्थिक उपाय।
- मुहम्मद तुगलक: प्रमुख प्रकल्प, कृषि उपाय, मुहम्मद तुलगक की अफसरशाही।
- फिरोज तुगलक : कृषि उपाय, सिविल इंजीनियरी एवं लोक निर्माण में उपलब्धियां, दिल्ली।
- सल्तनत का पतन, विदेशी संपर्क एवं इब्नबतूता का वर्णन।

17. तेरहवीं एवं चौदहवीं शताब्दी का समाज, संस्कृति एवं अर्थव्यवस्था 143–156

- समाज: ग्रामीण समाज की रचना; शासी वर्ग, नगर निवासी, स्त्री, धार्मिक वर्ग, सल्तनत के अंतर्गत जाति एवं दास प्रथा; भक्ति आंदोलन, सूफी आंदोलन।
- संस्कृति : फारसी साहित्य, उत्तर भारत की क्षेत्रीय भाषाओं का साहित्य; दक्षिण भारत की भाषाओं का साहित्य; सल्तनत स्थापत्य एवं नए स्थापत्य रूप, चित्रकला, सम्मिश्र संस्कृति का विकास।
- अर्थ व्यवस्था: कृषि उत्पादन, नगरीय अर्थव्यवस्था एवं कृषितर उत्पादन का उद्भव, व्यापार एवं वाणिज्य।

18. पंद्रहवीं एवं प्रारंभिक सोलहवीं शताब्दी-राजनैतिक घटनाक्रम एवं अर्थव्यवस्था 157–164

- प्रांतीय राजवंशों का उदय: बंगाल, कश्मीर (जैनुल आबदीन), गुजरात, मालवा, बहमनी।
- विजयनगर साम्राज्य।
- लोदीवंश।
- मुगल साम्राज्य, पहला चरण, बाबर एवं हुमायूँ।

19. पंद्रहवीं एवं प्रारंभिक सोलहवीं शताब्दी : समाज एवं संस्कृति 165–168

- क्षेत्रीय सांस्कृतिक विशिष्टताएं।
- साहित्यिक परंपराएं।
- प्रांतीय स्थापत्य।
- विजयनगर साम्राज्य का समाज; संस्कृति, साहित्य और कला।

20. अकबर 169–174

- विजय एवं साम्राज्य का सुदृढ़ीकरण।
- जागीर एवं मनसब व्यवस्था की स्थापना।
- राजपूत नीति।
- धार्मिक एवं सामाजिक दृष्टिकोण का विकास, सुलह-ए-कुल का सिद्धांत एवं धार्मिक नीति।
- कला एवं प्रौद्योगिकी को राज-दरबारी संरक्षण।

21. सत्रहवीं शताब्दी में मुगल साम्राज्य 175–182

- जहांगीर, शाहजहां एवं औरंगजेब की प्रमुख प्रशासनिक नीतियां
- साम्राज्य एवं जमींदार
- जहांगीर, शाहजहां एवं औरंगजेब की धार्मिक नीतियां
- मुगल राज्य का स्वरूप
- उत्तर सत्रहवीं शताब्दी का संकट का विद्रोह
- अहोम साम्राज्य
- शिवाजी एवं प्रारंभिक मराठा राज्य

22. सोलहवीं एवं सत्रहवीं शताब्दी में अर्थव्यवस्था एवं समाज..... 183–187

- जनसंख्या, कृषि उत्पादन, शिल्प उत्पादन
- नगर, डच, अंग्रेजी एवं फ्रांसीसी कंपनियों के माध्यम से यूरोप के साथ वाणिज्य, व्यापार क्रांति
- भारतीय व्यापारिक वर्ग, बैंकिंग, बीमा एवं ऋण प्रणालियां
- किसानों की दशा, स्त्रियों की दशा
- सिख समुदाय एवं खालसा पंथ का विकास

23. मुगल साम्राज्यकालीन संस्कृति..... 188–196

- फारसी इतिहास एवं अन्य साहित्य
- हिंदी एवं अन्य धार्मिक साहित्य
- मुगल स्थापत्य
- मुगल चित्रकला
- प्रांतीय स्थापत्य एवं चित्रकला
- शास्त्रीय संगीत
- विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी

24. अठारहवीं शताब्दी..... 197–202

- मुगल साम्राज्य के पतन के कारक
- क्षेत्रीय सामंत देश, निजाम का दकन, बंगाल अवध
- पेशवा के अधीन मराठा उत्कर्ष,
- मराठा राजकोषीय एवं वित्तीय व्यवस्था
- अफगान शक्ति का उदय, पानीपत का युद्ध–1761
- ब्रिटिश विजय की पूर्व संध्य में राजनीति, संस्कृति एवं अर्थव्यवस्था की स्थिति

द्वितीय प्रश्न–पत्र

1. भारत में यूरोप का प्रवेश..... 203–208

- प्रारंभिक यूरोपीय बस्तियां; पुर्तगाली एवं डच, अंग्रेजी एवं फ्रांसीसी ईस्ट इंडिया कंपनियां; आधिपत्य के लिए उनके युद्ध; बंगाल–अंग्रेजों एवं बंगाल के नवाब के बीच संपर्क, सिराज और अंग्रेज; प्लासी का युद्ध; प्लासी का महत्व।

2. भारत में ब्रिटिश प्रसार..... 209–213

- बंगाल–मीट जाफर एवं मीर कासिम, बक्सर युद्ध; मैसूर, मराठा; तीन अंग्रेज–मराठा युद्ध; पंजाब

3. ब्रिटिश राज्य की प्रारंभिक संरचना..... 214–215

- प्रारंभिक प्रशासनिक संरचना; द्वैधशासन के प्रत्यक्ष नियंत्रण तक; रेगुलेटिंग एक्ट (1773); पिट्स इंडिया एक्ट (1784); चार्टर एक्ट (1833); मुक्त व्यापार का स्वर एवं ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन का बदलता स्वरूप; अंग्रेजी उपयोगितावादी और भारत।

4. ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन का आर्थिक प्रभाव..... 216–234

क) ब्रिटिश भारत में भूमि–राजस्व, बंदोबस्त; स्थायी बंदोबस्त; रैयतवारी बंदोबस्त; महलबारी बंदोबस्त; राजस्व प्रबंध का आर्थिक प्रभाव; कृषि का वाणिज्यीकरण; भूमिहीन कृषि श्रमिकों का उदय; ग्रामीण समाज का परिक्षीणन।

ख) पारंपरिक व्यापार एवं वाणिज्य का विस्थापन; अनौद्योगीकरण; पारंपरिक शिल्प की अवनति; धन का अपवाह; भारत का आर्थिक रूपांतरण; टेलीग्राफ एवं डाक सेवाओं समेत रेल पथ एवं संचार जाल; ग्रामीण भीतरी प्रदेश में दुर्भिक्ष एवं गरीबी; यूरोपीय व्यापार उद्यम एवं इसकी सीमाएं।

5. सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास..... 235–236

- स्वदेशी शिक्षा की स्थित; इसका विस्थापन; प्राच्यविद्–आंग्लविद् विवाद, भारत में पश्चिमी शिक्षा का प्रादुर्भाव; प्रेस, साहित्य एवं लोकमत का उदय; आधुनिक मातृभाषा साहित्य का उदय; विज्ञान की प्रगति; भारत में क्रिश्चियन मिशनरी के कार्यकलाप।

6. बंगाल एवं अन्य क्षेत्रों में सामाजिक एवं धार्मिक सुधार आंदोलन..... 237–248

- राममोहन राय, ब्रह्म आंदोलन; देवेन्द्रनाथ टैगोर; ईश्वरचंद्र विद्यासागर; युवा बंगाल आंदोलन; दयानंद सरस्वती; भारत में सती, विधवा विवाह, बाल विवाह आदि समेत सामाजिक सुधार आंदोलन; आधुनिक भारत के विकास में भारतीय पुनर्जागरण का योगदान; इस्लामी पुनरुद्धारवृत्ति–फराइजी एवं वहाबी आंदोलन।

7. ब्रिटिश शासन के प्रति भारत की अनुक्रिया:..... 249–254

- रंगपुर ढींग (1783), कोल विद्रोह (1832), मालाबार में मोपला विद्रोह (1841–1920), सन्थाल हुल (1855), नील विद्रोह (1859–60), दकन पिप्लव (1875) एवं मुंडा उल्गुलान (1899–1900) समेत 18वीं एवं 19वीं शताब्दी में हुए किसान आंदोलन एवं जनजातीय विप्लव; 1857 का महाविद्रोह–उद्गम, स्वरूप, असफलता के कारण, परिणाम; पश्च 1857 काल में किसान विप्लव के स्वरूप में बदलाव; 1920 और 1930 के दशकों में हुए किसान आंदोलन।

8. भारतीय राष्ट्रवाद के जन्म के कारक.... 255-267

➲ संघों की राजनीति; भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की बुनिवाद; कांग्रेस के जन्म के संबंध में सेफ्टी वाल्व का पक्ष; प्रारंभिक कांग्रेस के कार्यक्रम एवं लक्ष्य; प्रारंभिक कांग्रेस नेतृत्व की सामाजिक रचना; नरम दल एवं गरम दल; बंगाल का विभाजन (1905), बंगाल में स्वदेशी आंदोलन; स्वदेशी आंदोलन के आर्थिक एवं राजनैतिक परिप्रेक्ष्य; भारत में क्रांतिकारी उग्रपथ का आरंभ।

9. गांधी का उदय..... 268-275

➲ गांधी के राष्ट्रवाद का स्वरूप; गांधी का जनाकर्षण; रोलेट सत्याग्रह; खिलाफत आंदोलन; असहयोग आंदोलन समाप्त होने के बाद में सविनय अवज्ञा आंदोलन के प्रारंभ होने तक की राष्ट्रीय राजनीति; सविनय अवज्ञा आंदोलन के दो चरण; साइमन कमीशन; नेहरू रिपोर्ट; गोलमेज परिषद्, राष्ट्रवाद और किसान आंदोलन; राष्ट्रवाद एवं श्रमिक वर्ग आंदोलन; महिला एवं भारतीय युवा और भारतीय राजनीति में छात्र (1885-1947); 1937 का चुनाव तथा मंत्रालयों का गठन; क्रिप्स मिशन; भारत छोड़ो आंदोलन; वैवेल योजना; कैबिनेट मिशन

10. औपनिवेशिक..... 276-278

➲ भारत में 1958 और 1935 के बीच सांविधानिक घटनाक्रम।

11. राष्ट्रीय आंदोलन की अन्य कड़ियां..... 279-284

➲ क्रांतिकारी; बंगाल, पंजाब, महाराष्ट्र, यू.पी., मद्रास प्रदेश, भारत से बाहर, वामपंथ, कांग्रेस के अंदर का वाम पक्ष; जवाहर लाल नेहरू, सुभाष चंद्र बोस, कांग्रेस समाजवादी पार्टी, भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी, अन्य वामदल।

12. अलगाववाद की राजनीति.....285

➲ मुस्लिम लीग; हिन्दू महासभा; सांप्रदायिकता एवं विभाजन की राजनीति; सत्ता का हस्तांतरण; स्वतंत्रता।

13. एक राष्ट्र के रूप में सुदृढ़ीकरण..... 286-295

➲ नेहरू की विदेशी नीति; भारत और उसके पड़ोसी (1947-1964) राज्यों का भाषावाद पुनर्गठन (1935-1947); क्षेत्रीयतावाद एवं क्षेत्रीय असमानता; भारतीय रियासतों का एकीकरण; निर्वाचन की राजनीति में रियासतों के नरेश (प्रिंस); राष्ट्रीय भाषा का प्रश्न।

14. 1947 के बाद जाति एवं नृजातित्व..... 296-299

➲ उत्तर-औपनिवेशिक निर्वाचन-राजनीति में पिछड़ी जातियां एवं जनजातियां; दलित आंदोलन।

15. आर्थिक विकास एवं राजनैतिक परिवर्तन..... 300-303

➲ भूमि सुधार; योजना एवं ग्रामीण पुनर्रचना की राजनीति; उत्तर औपनिवेशिक भारत में पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण नीति; विज्ञान की तरक्की।

16. प्रबोध एवं आधुनिक विचार..... 304-313

(i) प्रबोध के प्रमुख विचार; कांट, रूसो

(ii) उपनिवेशों में प्रबोध - प्रसार

(iii) समाजवादी विचारों का उदय (मार्क्स तक); मार्क्स के समाजवाद का प्रसार

17. आधुनिक राजनीति के मूल स्त्रोत..... 314-325

(i) यूरोपीय राज्य प्रणाली

(ii) अमेरिकी क्रांति एवं संविधान

(iii) फ्रांसीसी क्रांति एवं उसके परिणाम, 1789-1815

(iv) अब्राहम लिंक्न के संदर्भ के साथ अमेरिकी सिविल युद्ध एवं दासता का उन्मूलन।

(v) ब्रिटिश गणतंत्रात्मक राजनीति, 1815-1850; संसदीय सुधार, मुक्त व्यापारी, चार्टरवादी।

18. औद्योगीकरण..... 326-333

(i) अंग्रेजी औद्योगिकी क्रांति: कारण एवं समाज पर प्रभाव

(ii) अन्य देशों में औद्योगिकरण; यू.एस.ए., जर्मनी, रूस, जापान

(iii) औद्योगीकरण एवं भूमंडलीकरण

19. राष्ट्र राज्य प्रणाली..... 334-342

(i) 19वीं शताब्दी में राष्ट्रवाद का उदय

(ii) राष्ट्रवाद: जर्मनी और इटली में राज्य निर्माण

(iii) पूरे विश्व में राट्रीयता के आविर्भाव के समक्ष साम्राज्यों का विघटन

20. साम्राज्यवाद एवं उपनिवेशवाद..... 343-355

(i) दक्षिण एवं दक्षिण-पूर्व एशिया

(ii) लातीनी अमेरिका एवं दक्षिण अफ्रीका

(iii) आस्ट्रेलिया

(iv) साम्राज्यवाद एवं मुक्त व्यापार: नव साम्राज्यवाद का उदय

21. क्रांति एवं प्रतिक्रांति..... 356-372

(i) 19वीं शताब्दी यूरोपीय क्रांतियां

(ii) 1917-1921 की रूसी क्रांति

(iii) फासीवाद प्रतिक्रांति, इटली एवं जर्मनी

(iv) 1949 की चीनी क्रांति

22. विश्व युद्ध..... 373-377

(i) संपूर्ण युद्ध के रूप में प्रथम एवं द्वितीय विश्व युद्ध: समाजीय निहितार्थ

(ii) प्रथम विश्व युद्ध : कारण एवं परिणाम

(iii) द्वितीय विश्व युद्ध : कारण एवं परिणाम

23. द्वितीय विश्व युद्ध के बाद का विश्व... 378-394

(i) दो शक्तियों का आविर्भाव

(ii) तृतीय विश्व एवं गुटनिरपेक्षता का आविर्भाव

(iii) संयुक्त राष्ट्र संघ एवं वैश्विक विवाद

24. औपनिवेशिक शासन में मुक्ति..... 395-401

(i) लातीनी अमेरिका-बोलीवी

(i) अरब विश्व-मिश्र

(iii) अफ्रीका-रंगभेद से गणतंत्र तक

(iv) दक्षिण पूर्व एशिया-वियतनाम

25. वि-औपनिवेशीकरण एवं अल्पविकास.. 402-408

विकास के बाधक कारक : लातीनी अमेरिका, अफ्रीका

26. यूरोप का एकीकरण 409-411

(i) युद्धोत्तर स्थापनाएं NATO एवं यूरोपीय समुदाय (यूरोपियन कम्युनिटी)

(ii) यूरोपीय समुदाय (यूरोपियन कम्युनिटी) का सुदृढ़ीकरण एवं प्रसार

(iii) यूरोपियाई संघ

27. सोवियत यूनियन का विघटन एवं एक ध्रुवीय विश्व का उदय..... 412-416

(i) सोवियत साम्यवाद एवं सोवियत यूनियन को निपात तक पहुंचाने वाले कारक, 1985-1991

(ii) पूर्वी यूरोप में राजनैतिक परिवर्तन 1989-2001

(iii) शीत युद्ध का अंत एवं अकेली महाशक्ति के रूप में US का उत्कर्ष

प्रथम प्रश्न–पत्र

मानचित्र

प्रश्न: ***आपको दिए गए मानचित्र पर अंकित निम्नलिखित स्थानों की पहचान कीजिए एवं अपनी प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में उनमें से प्रत्येक पर लगभग शब्दों की संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए। मानचित्र पर अंकित प्रत्येक के लिए स्थान-निर्धारण संकेत क्रमानुसार नीचे दिए गए हैं:***

(सिविल सेवा मुख्य परीक्षा 2022)

(i) पुरापाषाणकालीन स्थल
(ii) शवाधान-युक्त मध्यपाषाणकालीन स्थल
(iii) नवपाषाणकालीन गर्तावास
(iv) प्रारम्भिक ग्रामीण बस्ती
(v) नवपाषाणकालीन स्थल
(vi) नवपाषाणकालीन-ताम्रपाषाणकालीन स्थल
(vii) हड़प्पन यूनेस्को स्थल
(viii) महापाषाणकालीन शवाधान स्थल
(ix) द्वितीय संगम का स्थल
(x) प्रारम्भिक सातवाहन राजधानी
(xi) अशोक का अभिलिखित प्रतिमा स्थल
(xii) प्रथम गुप्तकालीन मुद्रा-निधि
(xiii) धात्विक प्रतिमा-निधि
(xiv) प्राचीन बन्दरगाह
(xv) प्राचीनतम जेसुइट चर्च
(xvi) गान्धार कला-केन्द्र
(xvii) बौद्ध विहार
(xvii) प्रारम्भिक विष्णु मन्दिर स्थल
(xix) शैव एवं बौद्ध मन्दिर संकुल
(xx) प्रारम्भिक चौत्य गृह

1. पुरापाषाण स्थल (डीडवाना): डीडवाना राजस्थान के नागौर जिले का एक कस्बा है। यहां से पुरापाषाणकालीन पत्थर के औजार मिले हैं।

- डीडवाना का कोई संकलित इतिहास नहीं है, किन्तु यहां किए गए उत्खलन से पता चला है कि मानव जाति के पूर्वजों से सम्बंधित गतिविधियां यहां रही है।
- शहर के पास बांगड़ नहर के बहाव क्षेत्र में 700 मीटर चौड़े एवं 300 मीटर चौड़े दो रेतीले टीले मानव विकास के साक्षी रहे हैं।
- नागौर जिले का यह एकमात्र कस्बा है, जहां आदि मानव (होमो इरेक्टस और सेपियन्स), जीवाश्म, प्रागैतिहासिक और पाषाणकाल के अलावा गुप्त, प्रतिहार से लेकर मुगल काल तक की जानकारियां मिलती हैं।

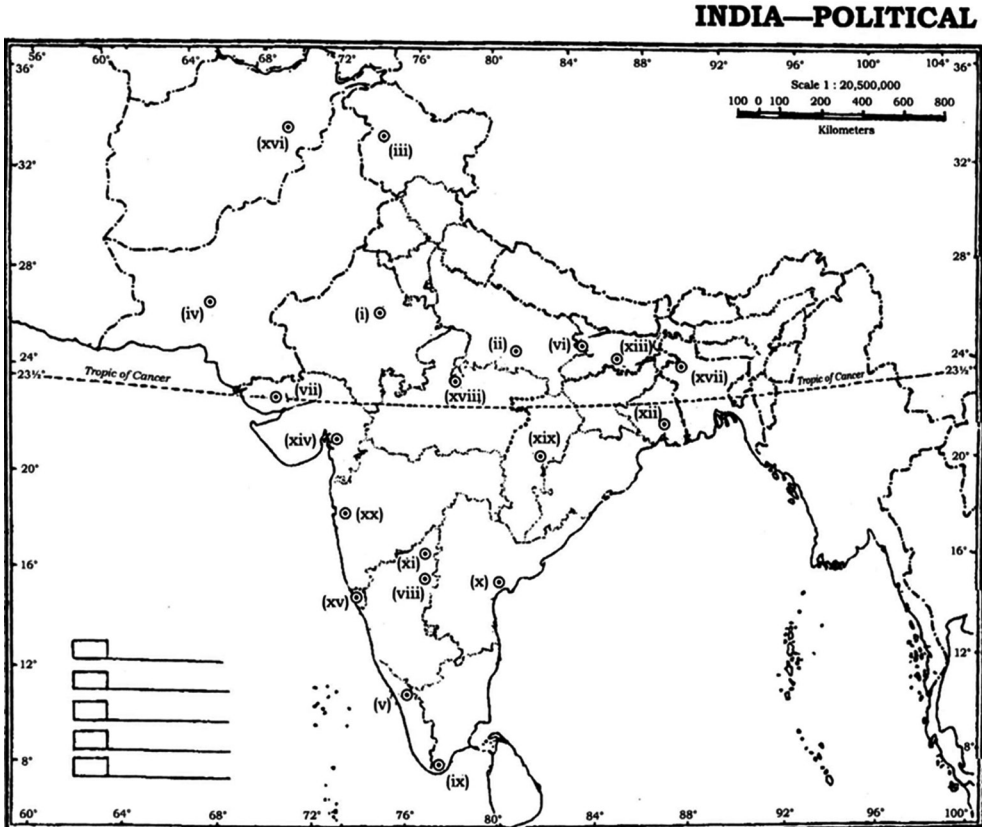

1

स्रोत : पुरातात्विक स्रोत

प्रश्न: ***प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत के रूप में विदेशी विवरण के कुछ लाभ हो सकते हैं, परन्तु इनमें कतिपय कमियां भी थीं। उपयुक्त उदाहरणों का हवाला देते हुए इस कथन का परीक्षण कीजिए।*** **(सिविल सेवा मुख्य परीक्षा 2022)**

उत्तर: प्राचीन भारत के इतिहास की जानकारी के लिए भारत में आए विदेशी यात्रियों का वर्णन भी विशेष महत्त्वपूर्ण है। इन विदेशियों से भारत की अतिशयोक्तिपूर्ण प्रशंसा नहीं की जा सकती। उनके वर्णन अधिकांशत: निष्पक्ष दिखाई देते हैं, किन्तु भारतीय समाज व उसकी भाषा की जानकारी न होने के कारण उन्होंने कुछ स्थानों पर कल्पित बातें भी लिखी हैं। कुल मिलाकर ये वृत्तान्त भारतीय इतिहास के लिए महत्त्वपूर्ण हैं। इन यात्रियों में (A) ईरानी, (B) यूनानी, (C) चीनी व (D) मुस्लिम यात्रियों के वृत्तान्त मिलते हैं, जो उस काल की भारत की परिस्थिति का सजीव चित्र उपस्थित करते हैं।

(A) **ईरानी यात्री**–जब भारत की समृद्धि की चर्चा पश्चिमी देशों में जोर-शोर से होने लगेगी तो ईरान के राजा ने ई. पूर्व छठी शताब्दी के प्रारम्भ में स्काईलैक्स नामक विद्वान को भारत भेजा, उसने सेना सहित भारत आकर यहां की भौगोलिक स्थिति का अध्ययन किया। उसका भारत वृत्तान्त बड़ा रोचक है।

- इतना ही नहीं ईरान के सम्राट डेरियम ने भी भारत के बारे में लेख लिखे हैं। इन लेखों से भारत तथा ईरान के सम्बन्धों पर प्रकाश पड़ता है।
- भारतवासियों की युद्ध कला को व यहां की खेती का भी वर्णन उसके लेखों में विद्यमान है। ईरान के राजवैद्य टेशियस ने भी भारत का वर्णन किया है, किन्तु वह अधिक विश्वसनीय नहीं है।

(B) **यूनानी यात्री**–सिकन्दर के साथ आए विद्वानों के भारत वर्णन अधिक विश्वसनीय व उपयोगी हैं। इनमें नियार्कस (NEARCKUS) नामक एक जन सेनापति था, दूसरा विद्वान सह-नाविक एरिस्टोबुलस (ARISTOBULUS) था, जिसने अपनी वृद्धावस्था में अपनी यात्रा का वर्णन लिखा है, किन्तु उनके वृत्तान्त अब उपलब्ध नहीं हैं।

- सिकन्दर की मृत्यु के पश्चात् उसके सेनापति सेल्युकस ने उसके पूर्वी साम्राज्य पर अधिकार कर लिया था। उसने भारत में मौर्य सम्राटों के दरबार में अपने राजदूत भेजे।
- चन्द्रगुप्त मौर्य से पराजित होकर उसने सन्धि कर ली और मेगस्थनीज (MEGASTHENES) को राजदूत बनाकर भेजा। वह लम्बे समय तक भारत में रहा और अपने ग्रन्थ 'इण्डिका' में भारत के शासन प्रबन्ध तथा भारतीय सामाजिक जीवन पर प्रकाश डाला, यद्यपि अब यह पुस्तक उपलब्ध नहीं है। किन्तु बाद के लेखकों–एरियन, अप्पियन (APPIAN), स्ट्रैबो व जस्टिन आदि ने मेगस्थनीज की पुस्तक से अनेक उद्धरण लिए हैं।
- एरियन के ग्रन्थों का ऐतिहासिक महत्त्व अधिक है। टॉलमी (PTOLOMY) ने भारत के भूगोल तथा प्लिनी ने पशुओं व वनस्पति का वर्णन किया है।

(C) **चीनी यात्री**–अशोक ने बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए अनेक धर्म प्रचारक मध्य एशिया में भेजे। जहां से भारतीय संस्कृति व बौद्ध धर्म का प्रचार सम्पूर्ण चीन में हो गया और चीनी लोग भारत को बड़े आदर से धर्म भूमि समझने लगे। अपनी धार्मिक जिज्ञासा को शान्त करने तथा बौद्ध धर्म के साहित्य का अध्ययन करने के लिए अनेक चीनी यात्री भारत आए और वह लम्बे समय तक यहीं रहे। यद्यपि उनके वृत्तान्त अधिकांशत: धार्मिक हैं, किन्तु उनमें तत्कालीन सामाजिक व राजनीतिक स्थिति की भी जानकारी मिलती है। यद्यपि इन जानकारियों के ऐतिहासिक प्रमाण पर इतिहासकारों में विभेद है।

- चीनी यात्रियों में सर्वाधिक महत्त्व फाहियान, ह्वेनसांग तथा इत्सिंग का है। फाहियान के द्वारा चन्द्रगुप्त द्वितीय के काल के भारत का वर्णन मिलता है। वह मूलत: धार्मिक वर्णन तक अपने को सीमित रखता है, फिर भी उसके वृत्तान्त का पर्याप्त ऐतिहासिक महत्त्व है।
- ह्वेनसांग सम्राट हर्ष के काल में भारत आया, लम्बे समय तक भारत में रहा। उसने धार्मिक वर्णन के साथ-साथ तत्कालीन भारत की सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक स्थिति का भी वर्णन किया है।
- इत्सिंग सातवीं शताब्दी में भारत आया और बहुत समय तक विक्रमशिला व नालन्दा विश्वविद्यालयों में अध्ययन करता रहा। उसने भी उस समय की सामाजिक और धार्मिक परिस्थितियों का वर्णन किया है।
- तिब्बती लेखकों में लामातारा नाम प्रसिद्ध है। उनके ग्रन्थों 'कांग्युर' तथा 'तंग्युर' में भारत का वर्णन मिलता है।

2

प्रागैतिहास एवं आद्य इतिहास

प्रश्नः मध्य भारत और दक्कन में गैर-हड़प्पाकालीन ताम्रपाषाण संस्कृतियों का उदय न केवल लोगों की जीवन-निर्वाह की पद्धति में परिवर्तन का द्योतक है, वरन् प्राक् से आद्य ऐतिहासिक काल के समग्र संक्रमण का भी द्योतक है। समालोचनापूर्वक विश्लेषण कीजिए।

(सिविल सेवा मुख्य परीक्षा, 2017)

उत्तरः नवपाषाण युग का अंत होते-होते धातुओं का इस्तेमाल शुरू हो गया। धातुओं में सबसे पहले तांबे का प्रयोग हुआ। कई संस्कृतियों का जन्म पत्थर और तांबे के उपकरणों का साथ-साथ प्रयोग करने के कारण हुआ। इन संस्कृतियों का ताम्रपाषाणिक (कैल्कोलिथिक) कहते हैं। ताम्रपाषाणिक अवस्था हड़प्पाकालीन अवस्था की अग्रगामी है क्योंकि इस संस्कृति के लोग तांबे और पत्थरों का साथ-साथ प्रयोग करते थे। इसके विपरीत हड़प्पाई लोग कांसे का प्रयोग करते थे। भारत में ताम्र पाषाण अवस्था की बस्तियां दक्षिण-पूर्वी राजस्थान, मध्य प्रदेश के पश्चिमी भाग, पश्चिम महाराष्ट्र तथा दक्षिण-पूर्वी भारत में पाई गई हैं।

मध्य भारत में मालवा, कामथा एवं एरण बस्तियां प्रमुख हैं जबकि दक्कन क्षेत्र में जोरवे, नेवासा, दैमाबाद, चंदौली, सोनगांव, इनामगांव आदि बस्तियां अपना विशेष ताम्र पाषाणिक महत्व रखती है।

मध्य भारत और दक्कन में प्राप्त इन ताम्र पाषाणिक स्थलों को देखने पर हड़प्पा संस्कृति से स्पष्ट विभेद समझ में आता है। ताम्रपाषिक लोग पत्थर के छोटे-छोटे औजारों का हथियार के रूप में इस्तेमाल करते थे साथ ही विभिन्न प्रकार के मृद्भाण्डों एवं काले व लाल रंग के बर्तनों का प्रयोग भी करते थे।

दक्कन एवं मध्य क्षेत्र के मृदभाण्ड चित्रित हुआ करते थे। ये लोग पकी ईटों से परिचित नहीं थे। दूसरी जगह पत्थरों का प्रयोग इनके जीवन का हिस्सा था। ये लोग तांबे के कुशल शिल्पी प्रतीत होते हैं क्योंकि कई बस्तियों से तांबे के औजार, कंकण, चरखे और तकलियां आदि मिली हैं।

वास्तव में ताम्र पाषाणिक समाज व संस्कृति प्राक्र हड़प्पाई संस्कृति और आद्य एतिहासिक काल के मध्य की वह संक्रमण कालीन अवस्था है जिसके आधार पर आद्य जीवन सुगत व तकनीकि संपन्न बना। ताम्र पाषाणिक ग्रामीण जीवन, मैदानी एवं नदियों के समीप का जीवन व तकनीकि प्रधान जीवन उपर्युक्त बात का स्पष्ट प्रमाण है।

प्रश्नः भारत में नवपाषाण काल की प्रादेशिक विशिष्टताओं की रूपरेखा प्रस्तुत कीजिए और उनका कारण भी बताइए।

(सिविल सेवा मुख्य परीक्षा, 2016)

उत्तरः भारत में अनेक नवपाषाणकालीन बस्तियों के प्रमाण मिले हैं। सबसे पहला एवं स्पष्ट प्रमाण बोलन नदी के किनारे मेहरगढ़ (सिंध और बलूचिस्तान-पाकिस्तान) नामक स्थल से प्राप्त होता है। इस जगह पर लगभग 7000 ई. पू. ही कृषि उत्पादन आरंभ हो चुका था। यहां से 5000 ई. में ही गेहूं और जौ की विभिन्न प्रजातियों के उगाए जाने के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं। इसी प्रकार बुर्जहोम (कश्मीर), राना घुंडई (बलूचिस्तान-पाकिस्तान), पिकलीहल, उतनूर, (आंध्र प्रदेश), किली गुल मोहम्मद (क्वेटा घाटी, पाकिस्तान), सराय खोला (रावलपिंडी, पाकिस्तान), पैयामपल्ली (तमिलनाडु), चिरांद (बिहार), मास्की, ब्रह्मगिरी, हलुर, कोडिकल, संगनकल्लू (कर्नाटक) आदि से नवपाषाणिक बस्तियों के अवशेष मिले हैं। कालीबंगा (राजस्थान), कोल्डीहवा (उत्तर प्रदेश) से कृषि के प्रमाण तथा असम और मेघालय से नवपाषाणिक उपकरण मिले हैं। इन सभी स्थलों में बलूचिस्तान तथा सिंघ की नवपाषाणिक संस्कृतियां विकसित थीं जिन्होंने ग्रामीण सभ्यता की स्थापना की तथा आगे चलकर हड़प्पा संस्कृति के शहरी स्वरूप को प्रभावित किया।

कश्मीर के बुर्जहोम की नवपाषाणिक संस्कृति उत्तर-पश्चिम जितनी विकसित नहीं थी। यहां से अंडाकार या वृत्ताकार गर्तगृह (Pits) के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं जिनमें नीचे उतरने के लिए सीढ़ियां बनी हुई थी। दीवारों में आले बने हुए थे।

प्रवेशद्वार के पास चूल्हे थे और चारदीवारी के पास स्तंभ-गर्त मिले हैं जिनसे छप्पर का संकेत मिलता है। यहां से हस्तनिर्मित मिट्टी के बर्तन तथा हड्डी के उपकरण (कांटा, आरी, बर्छी, सूई आदि) मिले हैं। प्रथम चरण में यहां की अर्थव्यवस्था आखेट एवं मछली के शिकार पर आश्रित थी परंतु नवपाषाण युग के दूसरे चरण से कृषि एवं पशुपालन के भी साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।

दक्षिण में संगनकल्लू और पिकलीहल से पॉलिश किए गए प्रस्तर-उपकरण और मिट्टी के हस्तनिर्मित बर्तन मिले हैं साथ ही यहां से कृषि एवं पशुपालन के भी साक्ष्य मिले हैं। इसी प्रकार कोल्डीहवा (उत्तर प्रदेश) से चावल के प्रमाण मिले हैं। पूर्वी भारत में सबसे महत्वपूर्ण नवपाषाणिक स्थल चिरांद (छपरा, बिहार) है।

3

सिंधु घाटी सभ्यता

प्रश्नः *हड़प्पीय सभ्यता का नगरीय चरित्र न तो किसी बाहरी प्रभाव का परिणाम था और न ही कोई अचानक होने वाली घटना; अपितु यह स्थानीय सामाजिक-आर्थिक कारकों का क्रमिक विकास था। टिप्पणी कीजिए।*

(सिविल सेवा मुख्य परीक्षा 2022)

उत्तरः हड़प्पा सभ्यता तीसरी सहस्राब्दी ईसा पूर्व के दौरान भारतीय उपमहाद्वीप में विकसित हुई। यह एक अत्यधिक विकसित सभ्यता थी जो अपने स्वरूप में शहरी प्रतीत होती है। उत्खनन से प्राप्त साक्ष्य ने हड़प्पा के लोगों के सामाजिक-सांस्कृतिक-धार्मिक-पारिस्थितिकी और राजनीतिक जीवन को समझने में मदद की। हड़प्पा सभ्यता एक स्वदेशी सभ्यता थी। हड़प्पा सभ्यता किसी अचानक विकास का परिणाम नहीं थी, बल्कि वास्तव में, यह 3000 से अधिक वर्षों में फैले एक क्रमिक विकास की लंबी प्रक्रिया की परिणति का प्रतिनिधित्व करती थी।

- सिंधु घाटी सभ्यता को तीन चरणों में विभाजित किया गया था- प्रारंभिक हड़प्पा, परिपक्व हड़प्पा और उत्तर हड़प्पा।

हड़प्पा सभ्यता की अवधि

हड़प्पा सभ्यता को तीन प्रमुख चरणों में विभाजित किया गया है; प्रारंभिक, परिपक्व और उत्तर हड़प्पा।

- पुरातत्वविद प्राचीन सिंधु नगरों को पूर्ण विकसित सभ्यता मानते हैं। यह उनके सामाजिक पदानुक्रम, लेखन प्रणाली, बड़े पैमाने पर नियोजित बस्तियों और लंबी दूरी के व्यापार के कारण है।
- यह सिंधु घाटी परंपरा का एक हिस्सा है, जिसमें मेहरगढ़ की पूर्व-हड़प्पा बस्ती भी शामिल है।
- सिंधु घाटी में सबसे पुराना कृषि स्थल। पूर्व-हड़प्पा चरण भारत के लौह युग को चिह्नित करता है।

प्रारंभिक हड़प्पा काल

प्रारंभिक हड़प्पा चरण को रावी चरण के रूप में भी जाना जाता है। पास की रावी नदी के कारण नाम दिया गया था। यह लगभग 3300 ईसा पूर्व से 2800 ईसा पूर्व तक चला।

- यह तब शुरू हुआ जब पहाड़ों के किसान धीरे-धीरे अपने पहाड़ी घरों और तराई की नदी घाटियों के बीच चले गए।
- यह हाकरा चरण से संबंधित है, जिसे पश्चिम में घग्घर-हकरा नदी घाटी में पहचाना जाता है; यह कोट दीजी चरण (2800-2600 ईसा पूर्व), मोहनजोदड़ो के पास उत्तरी सिंध, पाकिस्तान में एक स्थल से पहले का है। पाकिस्तान के रहमान ढेरी और अमरी पुराने पुरवा संस्कृतियों के परिपक्व चरण के उदाहरण हैं।
- कोट दीजी परिपक्व हड़प्पा से पहले की अवधि को दर्शाता है, जिसमें किला केंद्रीकृत सरकार और जीवन के अधिक शहरीकृत तरीके का प्रतीक है।
- इस प्रारंभिक हड़प्पा चरण का एक और शहर कालीबंगन में भारत में हाकरा नदी पर खोजा गया था।
- व्यापार मार्ग ने इस संस्कृति को अन्य क्षेत्रीय संस्कृतियों और कच्चे माल के दूर के स्रोतों जैसे लापीस लाजुली और अन्य मनका बनाने वाली सामग्री से जोड़ा।
- इस स्थान पर, ग्रामीणों ने जल भैंस सहित विभिन्न प्रकार के पौधों और जानवरों को पालतू बना लिया था।
- 2600 ईसा पूर्व में, प्रारंभिक हड़प्पा गांव विशाल शहरी केंद्रों में विकसित हुए, जो परिपक्व हड़प्पा काल की शुरुआत को चिह्नित करते हैं। हाल के एक अध्ययन से संकेत मिलता है कि सिंधु घाटी के निवासी गांवों से शहरों में स्थानांतरित हो गए।

परिपक्व हड़प्पा चरण

प्रारंभिक हड़प्पा काल से परिपक्व हड़प्पा काल तक का संक्रमण बड़ी दीवारों वाली बस्तियों के निर्माण, व्यापार नेटवर्क के विस्तार और मिट्टी के बर्तनों की शैलियों, आभूषणों के संदर्भ में 'अपेक्षाकृत समान' भौतिक संस्कृति में क्षेत्रीय समुदायों के बढ़ते एकीकरण द्वारा चिह्नित है। परिपक्व हड़प्पा चरण 2600 ईसा पूर्व में शुरू हुआ और 1900 ईसा पूर्व तक चला। सभ्यता की प्रकृति के कारण इसे परिपक्व कहा जाता है।

- हड़प्पा सभ्यता के इस युग में एक अच्छी तरह से विकसित शहर, जल निकासी प्रणाली, ईंटें, मुहरें, प्राधिकरण और शासन, व्यापार और वाणिज्य, कला और सांस्कृतिक व्यवस्था, सामाजिक व्यवस्था, राजनीतिक व्यवस्था आदि हैं।
- इस प्रकार, यह एक पूरी तरह से सभ्य शहर बना रहा है। इस युग की जल निकासी प्रणाली और नगर नियोजन अभी भी दुनिया के कुछ शहरों की आधुनिक जल निकासी व्यवस्था से बेहतर थी।
- 2600 ईसा पूर्व तक, प्रारंभिक हड़प्पा समुदाय शहरीकृत हो गए थे। इस तरह के शहरी केंद्रों में आधुनिक पाकिस्तान में हड़प्पा, गणेरीवाला, मोहनजोदड़ो और आधुनिक भारत में धौलावीरा, कालीबंगन, राखीगढ़ी, रोपड़ और लोथल शामिल हैं।

4 महापाषाणयुगीन संस्कृतियां

प्रश्न. क्या महापाषाण को एकल, समरूप अथवा समकालीन संस्कृति का प्रतिनिधि मानना उपयुक्त होगा? महापाषाण-कालीन संस्कृतियों से किस प्रकार के भौतिक जीवन व सांस्कृतिक व्यवस्था का पता चलता है?

(सिविल सेवा मुख्य परीक्षा 2021)

उत्तर: महापाषाण कालीन संस्कृति से तात्पर्य उस काल से है, जब मृतकों को आबादी क्षेत्र से दूर कब्रिस्तानों में पत्थरों के बीच दफनाया जाता था। दक्षिण भारत में इस प्रकार से मृतकों को दफनाने की परम्परा लौह युग के साथ आरम्भ हुई। इस महापाषाण कालीन संस्कृति की सूचना हमें उनकी यथार्थ बस्ती से कम तथा कब्रों से ज्यादा मिलती है।

इस युग की भौतिक संस्कृति बर्तनों, पत्थर के औजारों, ताम्र/कांस्य की वस्तुओं तथा अन्य वस्तुओं पर आधारित थी। प्रथम चरण (2500 से 1800 C.E.) के बर्तन मुख्यत: हाथ से बनाए गए सलेटी अथवा मटमैले भूरे होते थे। सलेटी बर्तनों की विशेषता बर्तनों को पकाने के बाद उन पर लाल गेरू से रंगाई करना थी। इन बर्तनों में से कुछ ऐसे हैं जिनके पाए खोखले तथा वृत्ताकार हैं जो कि हड़प्पा पूर्व आमरी तथा कालीबंगन में मिले बर्तनों की किस्मों से मिलते-जुलते हैं।

प्रथम चरण से संबंधित मृद्भाण्ड की एक अन्य किस्म में चमकाए हुए काले एवं लाल बाह्य भाग वाले बर्तन जो बैंगनी रंग से रंगे जाते थे, मिलते हैं। द्वितीय चरण (1800-1500 C.E.) में चमकाए हुए काली एवं लालधारी वाले बर्तनों का चलन समाप्त हो जाता है और एक अन्य किस्म सामने आती है। यह किस्म छिद्रित तथा टोटी वाले बर्तनों की है। मृद्भाण्ड तैयार करने में बाहरी भाग को खुरदरा बनाने की तकनीक अपनाई जाती थी जो कि हड़प्पा पूर्व ब्लूचिस्तान के इलाकों में सामान्य थी। तृतीय चरण (1400-1050 C.E.) में जो नए मृद्भाण्ड चलन में आए वे हैं:

1. सख्त ऊपरी भाग वाले सलेटी एवं धूसर मृद्भाण्ड।
2. चाक से बनाए गए बैंगनी रंग के बगैर चमकाए मृद्भाण्ड।

यह दूसरी किस्म के बर्तन महाराष्ट्र के जोर्वे किस्म से मिलते-जुलते हैं जो कि दक्षिणी दक्कन तथा उत्तरी दक्कन के बीच सांस्कृतिक संबंधों की ओर संकेत करता है। बर्तनों की किस्मों में विभिन्न प्रकार के प्याले (उड़ेलने के लिए विशिष्ट मुख वाले प्याले, टोंटी वाले प्याले, दस्ता लगे हुए तथा खोखले पाए वाले प्याले) जार, स्टैण्ड युक्त डोंगे तथा छिद्रित एवं टोंटी वाले बर्तन मिलते हैं। पत्थर के औजार तथा हड्डियों की शिल्पकृति-पत्थर के फलकों के उद्योग में लम्बे पतले, समानांतर दिशा वाले फलक, जिनमें से कुछ अतिरिक्त शिल्प कार्य के द्वारा अन्य रूप ले लेते थे, मिले हैं। सामानांतर दिशा वाले कुछ फलकों में काटने की धार पाई गई है।

कई पत्थर के औजारों पर पॉलिश की गई प्रतीत होती है। पॉलिश की गयी अथवा पत्थर की कुल्हाड़ी के उद्योग की सबसे सामान्य किस्म त्रिकोणीय कुल्हाड़ी है जिसका एक सिरा अंडाकार तथा दूसरा नुकीला है। अन्य किस्में हैं-बसुला, फाल, छेनी, रंदा तथा नुकीले औजार (जिन्हें कुदाल कहा गया है)। इनके अतिरिक्त पत्थर के अन्य औजार हैं-हथौड़े, फेंकने के पत्थर, पीसने वाले पत्थर, घिसाई के पत्थर तथा हस्तचलित चक्की। हस्तचलित चक्की खाद्य अनाज तैयार करने के काम आती थी।

हड्डियों के शिल्पकृति के शिल्पयुक्त हड्डियों, सींगें तथा प्राय: शाखायुक्त सींगें एवं सीप मिली हैं। सबसे सामान्य पुरावशेष नुकीले छेनी के उपकरणों का है, एक स्थान पर (पल्लावॉय) बैलों के कंधे की हड्डी को घिसकर तैयार की गयी हड्डियों की कुल्हाड़ी भी प्राप्त हुई है।

प्रश्न: महापाषाण संस्कृतियों के प्रसार, आवासीय प्रतिरुप एवं जीवन-यापन की विवेचना कीजिए।

(सिविल सेवा मुख्य परीक्षा, 2012)

उत्तर: किसी भी संस्कृति का नामकरण उसके मूलभूत लक्षणों के आधार पर किया जाता है। लगभग 1100-1000 ई. पू. के लगभग दक्षिण भारत में एक नई प्रकार की संस्कृति का उद्भव हुआ। इस संस्कृति की सूचना हमें उनकी यथार्थ बस्तियों से कम तथा उनकी कब्रों से ज्यादा मिलती है।

इन कब्रों को महापाषाण कहा जाता है, क्योंकि इन्हें बड़े-बड़े पत्थरों के टुकड़ों से घेर दिया जाता था। इन्हीं मूलभूत लक्षणों के आधार पर इस संस्कृति का नाम महापाषाण संस्कृति रखा गया। महापाषण संस्कृति का प्रसार प्रायद्वीपीय भारत में पाया जाता है, लेकिन इसका जमाव पूर्वी आन्ध्र प्रदेश व तमिलनाडु में अधिक प्रतीत होता है। इसके साथ ही कर्नाटक के कुछ हिस्सों में भी इसका प्रसार पाया जाता है।

काल क्रमानुसार महापाषण संस्कृति का प्रसार 1000 ई. पूर्व से माना जाता है। लेकिन कई मामलों में ईसा पूर्व पाँचवी सदी से लेकर ईसा पूर्व पहली सदी तक तथा कुछ मामलों में तो इसका प्रसार ईस्वी सन् की आरम्भिक सदियों तक मालूम पड़ता है।